Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852
Received: 06-03-2020; Accepted: 08-04-2020; Published: 17-04-2020
Volume 1; Issue 1; 2020; Page No. 25-28

फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियों में आंचलिक–बोध

दयानिधि सा
सहायक प्राध्यापक व विभाग प्रमुख, महात्मा गांधी स्नातक महाविद्यालय, भुक्ता,जि.–बरगढ़, ओड़िशा, भारत

प्रस्तावना

फणीश्वरनाथ 'रेणु' हिन्दी आंचलिक कथा साहित्य के जन्मदाता तथा प्राण प्रतिष्ठाता हैं। रेणु जी ने ग्रामांचल के परिवेश विशेष रूप से बिहार प्रदेश के पूर्णिया जिला के गांव–देहात के लोगों की जीवन समस्याओं व जीवन जिज्ञासाओं को लेकर उत्कृष्ट कहानियां सरजी हैं। रेणु जी द्वारा रचित 'एक आदिम रात्रि की महक', 'ठुमरी', 'अनिखोर', 'अच्छे आदमी' सरीखे कहानी संग्रहों में तीसरी कसम, पहलवान की ढोलक, लालपान की बेगम, एक आदिम रात्रि की महक,पंचलाईट, रसप्रिया, ठेस, नैना जोगिन, संवदिया, कुत्ते की आवाज जैसी कहानियां संकलित हैं। इन कहानियों में बिहार के ग्राम जीवन के सुख–दुख, आचार–विचार, रहन–सहन, रीति–रिवाज बड़ी शिद्दत से चित्रांकित हुए हैं।

'पंचलाईट' फणीश्वरनाथ रेणु जी की एक समस्या प्रधान कहानी है। इस कहानी में बिहार प्रान्त के किसी गांव विशेष का सामाजिक जीवन दर्शन चित्रित है। गांव देहात में पंचायतों एवं पंचों की यथार्थ स्थिति का सफल चित्रण इस कथाकृति में हुआ है। आंचलिक हिन्दी कथा साहित्य के प्राण प्रतिष्ठाता रेणु की इस कथाकृति में गांव की पंचायती व्यवस्था की सच्चाई चित्रित है। गांव में पंचों ने जुरमाने से सामूहिक हित के लिए सामान खरीदकर गांव की तरक्की की मनसा बनाई है। महतो टोली के पंचों ने राम नवमी के अवसर पर एक पेट्रोमैक्स खरीदा है। गांव में कुल मिलाकर आठ पंचायतें हैं। हरेक जाति–बिरादरी की अपनी–अपनी संभा चट्टी है। पंचों ने जुरमाने के रुपए से दरी, जाजिम, सतरंजी, पेट्रोमैक्स आदि खरीद कर अपना काम निकाला है।

महतो टोली के पंचों द्वारा खरीदे जाने पर दूसरी टोली के लोग जल उठते हैं। महतो टोली के पंच एक साथ पंचलाइट खरीदकर बक्से में पैक करके बड़ी शान से गांव में प्रवेश करते हैं। ब्राह्मण टोली के फुंटगी महतो टोली के लोगों को नीचा दिखाने के लिए पूछ बैठते हैं– कितने में लालटेन खरीद हुआ महतो?''01पंचायत के छड़ीदार, सरदार सभी लोग शाम को इकट्ठे हो जाते हैं। महतो टोली के औरत–मर्द, बच्चे–बूढ़े सभी काम काज छोड़कर पंचलैट देखने के लिए दौड़ आते हैं। टोले की कीर्तन मण्डली के मूलगैन मुखिया गायक ने भगतिया पच्छकों को समझाकर कहा– ''देखो आज पंचलैट की रोशनी में कीर्तन होगा। बेताले लोगों के पहले ही कह देता हूं, आज यदि आखर धरने में डेढ़ बेढ़ हुआ, तो दूसरे दिन से बैकाट।''02

टोली के सभी लोग सभा चट्टी में इकट्ठे होते हैं। रुदल साह बनिए की दुकान से तीन बोतल किरासन तेल लेकर आता है। अब सवाल यह खड़ा हो जाता है कि पंचलैट को जलाएगा कौन। महतो टोले के लोग नहीं चाहते कि दूसरी पंचायत से आदमी बुलाकर पंचलाइट जलाया जाय, क्योंकि इससे उनकी इज्जत मिट्टी में मिल जाएगा, लोग उन्हें हसेंगे, मजाक उड़ाएंगे। एक नौजवान आकर कहने लगता है–''राजपूत टोली के लोग हंसते–हंसते पागल हो रहे हैं। कहते हैं, कान पकड़कर पंचलैट के सामने पांच बार उठो बैठो तुरन्त जलने लगेगा।''03

गुलरी काकी की बेटी मुनरी मन ही मन एक बात सोच रही है कि गोधन को बुलाने पर झट से पंचलैट जला देता, लेकिन पंचायत ने उसका हुक्का पानी बन्द कर दिया है। मुनरी की मां ने शिकायत की थी की गोधन उनकी बेटी मुनरी को देखकर सिनेमा गीत ''हम तुमसे मोहाबत करके सलम'' गाता है और आंख मारता है। इसीलिए पंचों ने उसे बॉयकाट कर दिया है। मुनरी पंचों के सामने कुछ बोल नहीं पा रही है। अपनी जाति बिरादरी की प्रतिष्ठा का खयाल करते हुए सभी लोग निर्णय लेते हैं कि गोधन को बुलाया जाय, वही पंचलैट जला सकता है। सरदार जी कहते हैं –''जाति की बंदिश क्या, जब कि जाति की इज्जत ही पानी में बही जा रही है। क्यों जी दीवान।'' 04

गुलरी काकी उठकर गोधन को बुला लाती है। गोधन काकी की बात को न काट कर वहां आता है। गोधन देखता है कि स्पिरिट नहीं है, बिना स्पिरिट के पैट्रोमैक्स जलेगा कैसे। वह गरी तेल की सहायता से पंचलैट जला देता है। पंचलैट की रोशनी से पूरा परिवेश जगमगा उठता है। पंचलाइट की रोशनी से सारी टोली जगमा उठती है और कीर्तनिया लोग एक स्वर में कहने लगते हैं–महावीर स्वामी की जय। लेखक के शब्दों में–''महावीर स्वामी की जय–ध्वनि के साथ कीर्तन शुरु कर दिया। पंचलैट की रोशनी में सभी के मुस्कुराते हुए चेहरे स्पष्ट हो गए। गोधन ने सब का दिल जीत लिया। मुनरी ने हसरत भरी निगाह से गोधन की ओर देखा। आंखें चार हुईं और आंखों ही आंखों में बातें हुईं–कहा सुना माफ करना। मेरा क्या कुसूर।''05

पंचलाईट के जलने से पूरी महतो टोली के लोगों के चेहरों पर मुस्कुराहट छा जाती है। गोधन ने आज पूरे मुहल्ले की लाज रख दी, नाक कटने से बचा लिया। महतो टोली के लोगों की इज्जत बचानेवाला लड़का गोधन के प्रति पंच अपनी गलती स्वीकारत हैं और उस पर सारी पाबन्दियां हटाने का निश्चय करते हैं। मुनरी अपने प्यार को पाकर खुश हो जाती है। उसकी मां भी गोधन के प्रति स्नेह रखती हुई रात को भोजन करने की दावत देती है। गांव के लोगों में जागृति आती है और प्रेम का महत्व समझ पाते हैं। प्राचीन रुढ़ीवादी–दकियानुसी परंपरा त्यागकर गांव के लोग आधुनिक जीवन शैली अपनाने का आग्रह करते हैं।

'लालपान की बेगम' रेणु जी की एक आंचलिक कहानी है, जो हमें बिहार प्रान्त के ग्राम जीवन से परिचित कराती है। बिहार प्रान्त की ग्राम संस्कृति इसमें साकार हो उठी है। यहां बिरजू की मां यानी लाल पान की बेगम की मानसिक स्थिति का बहुत ही सूक्ष्म चित्रण हुआ है। वहां का एक परिवार आर्थिक दुरावस्था की चपेट में आकर मेले में नाच देखने की जद्दो जहद में फंसा हुआ है। ''क्यों बिरजू की मां, नाच देखने नहीं जाएगी क्या ?'' इस वाक्य ने बिरजू की मां के खून खौल दिया है। जंगी की पतोहू और मखनी फुआ दोनों बिरजू की मां से जलती हैं। वे दोनों बिरजू की मां की बेइज्जती करने की ताक में रहती

हैं। बिरजू की मां को गांव की औरतें लाल पान की बेगम कहकर चिढ़ाती हैं। जंगी की पतोहू उनसे नहीं डरती, मुंह से जवाब दिया करती है।

मखनी फुआ पानी भरती हुई गांव की औरतों के साथ बतियाती हुई कहती है–''जरा देखो तो बिरजू की मां को। चार मन पाट का पैसा क्या हुआ है, धरती पर पावं ही नहीं पड़ते। निसाफ करो। खुद अपने मुंह से आठ दिन पहले से ही गांव की अली–गली में बोलती फिरी है, हां बिरजू के बप्पा ने कहा है, बैलगाड़ी पर बिठाकर बलरामपुर का नाच दिखा लाउंगा। बैल अब अपने घर है, तो हजाार गाड़ी मंगनी मिल जाएगी।''06 जंगी को पतोहू मुंह जोर औरत है, रेलवे स्टेशन के पास की बेटी है। तीन ही महीनों में ससुराल की सभी औरतों से एकाध मोर्चा ले चुकी है। उसका ससुर जंगी दागी चोर है, सी–किलासी है। उसका पति रंगी कुर्मा टोली का नामी लठैत है। इसीलिए जंगी की पतोहू हमेशा औरतों से, मर्दो से लड़ने–झगड़ने के लिए सींग खुजाती फिरती है।

बिरजू की मां अपने पति पर बिगड़ती हुई झल्ला रही है। बिरजू अपनी मां से गुड़ की जीद करता है और चम्पिया दुकान से देरी पर आने के कारण मां की झिड़कियां खाकर बैठी है। बिरजू की गुड़ की जीद करने पर उसकी मां झल्लाती हुई कहती है– ''एक रत्ती क्यों, उठाके बर्तन को फेंक आती हूं पिछवाड़े में, जाके चाटना। नहीं बनेगी मिठी रोटी। मीठी रोटी खाने का मुंह होता हे। बिरजू की मां ने उबले शंकरकन्द का सूप रोती हुई चम्पिया के सामने रखती हुई कहती है– बैठके छिलके उतार नही तो अभी....।''07 सूर्यास्त हो चुका है, अभी तक बिरजू के बप्पा गाड़ी लेकर नहीं आए हैं। चम्पिया बताती है कि कोयरीटोले में किसी ने गाड़ी नहीं दी इसीलिए बप्पा मलदिहा टोली के मियां जान की गाड़ी लाने गए हैं। गाड़ी न मिलने की खबर सुनते ही बिरजू की मां का चेहरा उतर जाती है। बिरजू की मां के बाबू पर बिगड़ती है और दोनों बच्चों को लेकर सोने को चली जाती है। बिरजू चुप–चाप चम्पिया से कहता है–''हम लोग नाच देखने नहीं जाएगें? गांव में एक पंछी भी नहीं है। सब चले गए।'' 08 बिरजू और चम्पिया दोनों नाच देखने नहीं जा पाने के दुख से आंसू बहाने लगते हैं।

बिरजू की मां गुस्से से जल रही है। वह चम्पिया को ढिबरी बुझाकर, खपच्ची गिराकर सो जाने को कहती है। बप्पा बुलाएं तो जवाब न देने को भी कहती है। बिरजू की मां मन ही मन कुढ़ रही है– भला आदमी रे भला आदमी। मुंह देखो जरा इस मर्द का। वह दिन–रात मंझा न देती तो ले चुके थे जमीन। रोज आकर माथा पकड़कर बैठ जाएं, मुढ़े जमीन नहीं लेनी है बिरजू की मां, मजूरी ही अच्छी। जवाब देती थी बिरजू की मां खूब सोच समझके, छोड़ दो, जब तुम्हारा कलेजा ही थिर नहीं होता है तो क्या होगा? जोरु जमीन जोर के, नही तो किसी और के।''09 बिरजू की मां अब नाच देखने जाने की सारी आशा छोड़कर सोने की कोशिश कर रही है। तभी बैल गाड़ी की आवाज सुनाई पड़ी। बिरजू के बप्पा गाड़ी लेकर आ गए हैं।

बिरजू के बप्पा अपनी पत्नी का गुस्सा कम करने के लिए कहते हैं– नाच अभी शुरु नहीं हुआ होगा। अभी अभी बलरामपुर के बाबू की संपनी गाड़ी मोहनपुर होटिल बंगला से हाकिम को लाने गई है। इस साल आखिरी नाच है। पंचसीस टट्टी में खोंस दे, अपने खेत का है।''10 बिरजू की अम्मा धान की बात सुनते ही उछलती हुई आंगन में आ जाती है और आस–पड़ोस की जंगी की पतोहू, मखनी फुआ, सुनरी सभी को समेट कर बलरापुर में नाच देखने के लिए देर रात निकल पड़ती है। बिरजू की मां आज लाल रंग की साड़ी, सिन्दुर का लाल टीका, असली चांदी का मांग टीका पहनी हुई है। बिरजू के बप्पा उन्हें देखते ही रह जाते हैं, आज वह तो नाच की लाल पान की बेगम की तरह सुन्दर दिख रही है।

जंगी की पतोहू, लरेना की बीबी, राधे की बेटी सुनरी तीनों गाड़ी के पास आ गई। बिरजू की मां ने तीनों को प्यार से गाड़ी पर बिठा दिया। सभी लोग बैलगाड़ी पर सवार होकर बलरामपुर की ओर रवाना होने लगे। गाड़ी गांव से बाहर धान के खेतों से होकर जाने लगती है। कार्तिक महीने की शुभ्र चांदनी खिली हुई है। धान के झरते फूलों की सुगन्ध चारो तरफ फैल रही है। सभी औरतें बीड़ी पीने लगती है और धीमी आवाज में बैसकोप के गीत गुनगुनाने लगती हैं। बिरजू की मां लाली साड़ी के किनार से घुंघट हटाकर निहारती है और सोचती है कि वह वाकई लाल पान की बेगम की तरह सुन्दर है, जंगी की पतोहू उसे लाल पान की बेगम कहती है तो ठीक ही कहती है, क्योंकि वह लाल पान की बेगम की तरह सुन्दर है।

'तीसरी कसम उर्फ मारे गये गलफाम' रेणु जी की एक बड़ी कहानी है, जिसमें लघु उपन्यास का आभास होता है। यह एक घटना प्रधान कहानी है जो बड़े कलेवर में प्रस्तुत है। इसमें गांव देहात के एक गाड़ीवान की जीवन तरंग उद्भासित है। गाड़ीवान हीरामन का सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन मनोवैज्ञानिक शैली में चित्रित है। फॉरबीसगंज का मशहूर गाड़ीवान हिरामन पूरे इलाके में चर्चित है। वह बैलगाड़ी की सवारी करके अपना गुजारा करता है। वह एक ईमानदार व्यक्ति है, जो कभी भी कोई गलत काम नहीं करता। ईमानदारी ही उसकी लोकप्रियता की परिचायक है। पूरे इलाके के लोग बैलगाड़ी की सवारी के लिए हिरामन को ढूंढ़ते हैं, उन्हीं की बैलगाड़ी को भाड़े पर लेते हैं।

हिरामन ने दो कसमें खा रखी हैं– एक चोरी माल की सवारी नहीं करेंगे और दूसरी बांश की भाड़ेदारी नहीं करेंगे। कहानी के अंत में देखते हैं कि हिरामन एक और कसम–तीसरी खाता है कि किसी कंपनी की औरत हिराबाई जैसी मशहूर कलाकार को अपनी गाड़ी में नहीं बिठाऐंगे। हिरामन एक बार पुलिस की गिरफ्त में आने से बाल–बाल बचता है। बीसों गाड़ियों के साथ हिरामन भी भाड़े पर सामान ढो रहा है। रात को अचानक दारोगा गाड़ियां रोक देता है, छान बीन होती है। मुनीम जी पांच हजार तक रुपए देने की सिफारिश करते हैं, पर वह नहीं मानते और लोगों को गिरफ्तार करने के आदेश देते हैं। हिरामन किसी भी तरह से पुलिस की गिरफ्त से बचना चाहता है। वह बैलों को गाड़ी से खोलकर जंगल की झाड़ियों की तरफ जान बचाकर भागता है।

लेखक के शब्दों में–''एक दो तीन। तीन–चार गाड़ियों की आड़। हिरामन ने फैसला कर लिया। उसने धीरे से अपने बैलों के गले की रस्सियां खोल ली। गाड़ी पर बैठे–बैठे दोनों को जुड़वां बांध दिया। बैल समझ गये उन्हें क्या करना है। हिरामन उतरा, जुती हुई गाड़ी में बांस की टिकटी लगाकर बैलों के कंधों को बेलाग किया। दोनों के कानों के पास गुदगुदी लगा दी और मन ही मन बोला, चलो भैयन, जान बचेगी तो ऐसी–ऐसी सग्गड़–गाड़ी बहुत मिलेगी एक–दो–तीन। नौ–दो–ग्यारह।''11 उसी दिन से हिरामन ने कसमें खाईं कि चोरी चमारी माल और लादने का काम नहीं करेंगे। चाहे कोई उसे पचास रुपए भी किराया क्यों न दे, उसे ऐसी गलती नहीं करनी है।

हिरामन फारबिसगंज से मोरंग तक का भाड़ा ढोते ढोते गाड़ी ही चकनाचुर कर डालते हैं। गाड़ी के बुरी तरह से टूट जाने की वजह से वह कई वर्षों तक बैलों को अधिकारी में जोतता है। किराये का आधा गाड़ी वाले का तो आधा बैल वाले का। एक बार हिरामन को एक अच्छा मालदार काम मिला। किसी सर्कस वाले के बाध की गाड़ी ढोने का ऐलान सर्कस कम्पनी के मैनेजर ने गाड़ीवान पट्टी में किया। पूरे सौ रुपए किराए मिलेंगे। चम्पा नगर से फारबिसगंज मेले में आने के लिए बाघ गाड़ी ढोने का काम हिरामन ले लेता है, क्योंकि उसे पैसे की बहुत जरुरत है। हिरामन अपने बैलों की पीठ सहलाते हुए कहता है–''देखो भैयन, ऐसा मौका फिर हाथ न आएगा। यही मौका है अपनी गाड़ी बनवाने का। नहीं तो फिर आधे दारी। अरे, पिंजड़े में बन्द बाघ का क्या डर ? मोरंग की तराई में दहाड़ते हुए बाघों को देख चुके हो। फिर पीठ पर में तो हूं।''12

हिरामन को बाघगाड़ी के भाड़े से नकद सौ रुपए मिले और उपर से चाय बिस्किट रास्ते भर बन्दर, भालू और जोकर का तमाशा भी देखने को मिला। आज उसे एक जनानी सवारी मिली है। मानो आज उसकी गाड़ी पर कोई औरत नहीं चम्पा का फूल सवार हो। गाड़ी फूलों की खुशबू से मह–मह महक रही है। मथुरा मोहन नौटंकी कंपनी में लैला का रोल करनेवाली हीराबाई को आज गाड़ी पे सवारी बनाने का सौभाग्य हिरामन को मिला है। हिरामन लगातार सात–आठ वर्षों तक नौटंकी थिएटर या बॉयस्कोप सिनेमा वालों की लादनी लादता आ रहा है, पर कभी इसका आनन्द कभी नहीं ले सका है। हीराबाई को गाड़ी पे बिठाकर वह बैल हांकने लगा। हिरामन परदा उठाकर हीराबाई से कहता है –'' देखिए यही है तेगछिया। दो पेड़ जटामासी बड़े हैं और एक .... उस फूल का क्या नाम है, आपके कुरते पर जैसा फूल छपा हुआ है, खूब महकता है, दो कोस दूर तक गंध जाती है, उस फूल को खमीरा तम्बाकू में डालकर पीते भी हैं लोग।''13

हिरामन अपने दोनों बैलों के साथ मानवीय बर्ताव करता है। वह दोनों उसके लिए बैल नहीं जानवर की सकल में दो इनसान हैं। उन दोनों बैलों को वह अपने बेटे– भाई की तरह रखता है। दोनों बैल उसके सुख–दुख के साथी हैं, उसकी आमदानी के जरिए हैं। हीराबाई को फॉरबिसगंज से मोरंग तक का लम्बा सफर तय करते हुए बैलों का हौसला बंधाते हुए हिरामन कहता है–''एक कोस जमीन। जरा दम बांधकर चलो। प्यास की बेला हो गई न। याद है उस बार तेगछिया के पास सरकस कम्पनी के जोकर और बन्दर नचाने वाले साहब में झगड़ा हो गया था। जोकरवा ठीक बन्दर की तरह दांत किटकिटाकर किकियाने लगा था... न जाने किस–किस देस मुलुक के आदमी आते हैं।''14 हिरामन गाड़ी आगे बढ़ाता हुआ बहुत दूर आगे निकल पड़ता है। सुबह होते–होते वह नित्यकर्म के लिए बाहर चला जाता है। हीराबाई भी अपना नित्यकर्म संपन्न करके गाड़ी पर बैठ जाती है। हिरामन उनके लिए कुछ नाश्ते का प्रबन्ध करता है। हीराबाई की खूबसूरती उसे अपनी तरफ खींचने लगती है, वह उसे देखकर अत्मीयता भरी खुशी महसूस करता है। हिरामन बैलों को हांकता हुआ गाड़ी आगे बढ़ाता है और गीत गाने लगता है–

''सजन रे झूठ मति बोलो, खुदा के पास जाना है।
नहीं हाथी, नहीं घोड़ा, नहीं गाड़ी–
वहां पैदल ही जाना है, सजन रे.....।''15

हिरामन गाड़ी हांकता हुआ कई तरह के गाने गाता रहता है ताकि रास्ते का फासला पता न चले। उसके दोनों बैलों को भी गीत सुनकर बड़ा आनन्द आता होगा, वे भी गीतों की लय में अपनी लय मिलाकर कदमताल करते आगे बढ़ते हैं। वह महुआ घटवारिन गीत गाते समय भाव विभोर हो जाता है। महुआ घटवारिन का गीत गाते समय हिरामन की आंखें छलछला जाती हैं। वह बैलों को तेज चलने को कहता है ताकि सूरज डूबने से पहले ननपुर पहुंच जाय। फारबिसगंज पहुंचने की जल्दी हीराबाई को नहीं थी, क्योंकि उसे हिरामन पर पूरा भरोसा हो गया है। महुआ घटवारिन की कथा हिरामन के मुख से सुनकर हीराबाई की आखें छलछला जाती हैं।

''हिरामन का बहुत प्रिय गीत है यह। महुआ घटवारिन गाते समय उसके सामने सावन भादों की नदी उमड़ने लगती है। अमावस्या की रात और घने बादलों में रह–रह कर बिजली चमक उठती है। उसी चमक में लहरों से लड़ती हुई बारी–कुमारी महुआ की झलक उसे मिल जाती है। सफरी मछली की चाल और तेज हो जाती है। उसको लगता हे, वह खुद सौदागर का नौकर है। महुआ कोई बात नहीं सुनती। परतीत करती नहीं। उलटकर देखती भी नहीं। और वह थक गया है, तैरते–तैरते।''16 महुआ घटवारिन और उसकी विरह वेदना की कथा सुनकर हीराबाई और हिरामन के बीच एक अजीब सा आकर्षण पैदा हो जाता है। ननपुर से होकर फॉरबिसगंज पहुंचकर हिरामन और उसके दोनों बैलों ने चैन की सांस ली।

हिरामन ने अपनी गाड़ी को तिरपाल से ढंक रखा है। किसी की नजर हीराबाई पर ने पड़े, इसीलिए उसने ऐसा प्रबन्ध किया है। सुबह होते है नौंटकी कम्पनी के मैनेजर से बात करके हीराबाई भर्ती हो जाएगी। मेले में नौटंकी वालों की खूब जमती है, बहुत पैसा कमाते हैं, नौटंकीवाले। हिरामन को उसके गाड़ीवान साथी पूछते हैं कि इस बार किस नौटंकी कम्पनी की लादनी लादने को मिली है उसे। हिरामन अपने साथियों को चुपके से हीराबाई के बारे में बताता है कि नौटंकी कम्पनी की नाचनी है, जो तिरपाल के अन्दर छुपी बैठी है। ''गांव समाज के गाड़ीवान, एक दूसरे को खोजकर, आस पास गाड़ी लगाकर बासा डालते हैं। अपने गांव के लाल मोहर, धुन्मीराम और पलटदास जैसे गाड़ीवानों के दल को देखकर हिरामन अचकचा गया। उधर पलटदास टप्पर में झांककर भड़का। मानो बाघ पर नजर पड़ गई। हिरामन ने इशारे से सभी को चुप किया। फिर गाड़ी की ओर कनखी मारकर फुसफुसाया–''चुप। कम्पनी की औरत है, नौटंकी कंपनी की।''17

हीराबाई ''दि रौता संगीत नौटंकी'' कम्पनी में गुलबदन के रुप में काम करनेवाली है। मिस हीरादेवी की चर्चा सभी तरफ होने लगती है। मथुरा मोहन कम्पनी में काम करनेवाली मिस हीरादेवी अब कि बार रौता कम्पनी में काम करने जा रही है। कम्पनी में शामिल होने से पहले हीरादेवी भाड़े का पैसा पूरे पांच रुपए और उपर से पचास पैसे बकसीस देती है। हीराबाई कल सुबह नौटंकी देखने के लिए गेट पास ले लेने की बात कहकर अन्दर चली जाती है। हिरामन असमंजय में पड़ जाता है कि वह नौटंकी देखे या नहीं। नौटंकी की नाच देखते समय तीनों को ऐसा लग रहा था कि गुलबदन हीराबाई उन्हीं को देख रही है। नाच देखने के बाद तीनों ही अपने–अपने बसेरे में चले जाते हैं।

मथुरा मोहन कम्पनी छोड़कर आई हुई हीराबाई को ढूंढ़ते हुए गुण्डे 'रौता संगीत कम्पनी' में आते हैं। हीराबाई किसी भी तरह से गुंडों से खुद को बचाकर वहां से भाग निकलती है। हीराबाई कुछ रुपए हिरामन को देती हुई एक कम्बल खरीद लेने को जब कहती है हिरामन का मन भर आता है। हीराबाई चंचल हो गई और बोलने लगी–''हिरामन, इधर आओ अन्दर। मैं फिर लौटकर जा रही हूं मथुरा मोहन कम्पनी में। अपने देश की कम्पनी है। बनैली मेला आओगे न ?''18 हिरामन चुप चाप खड़े होकर हीराबाई को देखता ही रह जाता है, कुछ भी बोल नहीं पाता। हिरामन ने उसे सुरक्षित रेलवे स्टेशन तक पहुंचा दिया है, इसीलिए सन्तुष्ट होकर हीराबाई बक्सिस के तौर कुछ देना चाहती है। हिरामन के फीके चेहरे को देखकर हीराबाई कहती है कि महुआ घटवारिन को सौदागर ने खरीद लिया है, इसीलिए उसका चेहरा मुरझा गया है।

हीराबाई गाड़ी पर सवार हो जाती है। गाड़ी सीटी बजाकर चलने को होती है। स्टेशन से बाहर हिरामन अपनी गुलबदन हीराबाई को देखकर अन्दर ही अन्दर टूटता जा रहा है। हीराबाई भी रेल सीट पर बैठकर हिरामन को प्यार भरी नजर से देख रही है टुकुर–टुकुर। ''छी–ई–ई–छक्क। गाड़ी हिली। हिरामन ने अपने दाहिने पैर के अगूंठे को बाएं पैर की एड़ी से कुचल दिया। कलेजे की धड़कन ठीक हो गई। हीराबाई हाथ की बैगंनी साफी से चेहरा पोंछती है। साफी हिलाकर ईशारा करती है..... अब जाओ। आखिरी डिब्बा गुजरा, प्लेट फॉर्म खाली, सब खाली.....खोखले माल गाड़ी के डिब्बे। दुनिया ही खाली हो गई मानो। हिरामन अपनी गाड़ी के पास लौट आया।''19

हिरामन का मन भर गया। उसने निश्चय किया कि अब घर लौट चलेगा। लाल मोहर समझाने पर भी हिरामन मेले में रुकने को तैयार नहीं है। वह समझने लगा है कि बिना हीराबाई के खाली–खोखले मेले में आखिर क्या रखा है। वह घर की ओर लौटते समय महसूस करता है कि गाड़ी पर अभी चम्पे के फूल की महक चारो तरफ फैल रही है।

वह पीछे से किसी की आवाज सुनता है। पीछे मुड़ कर देखता है कि कुछ भी नहीं केवल सन्नाटा, अन्धेरा छाया हुआ है।

''उसने उलटकर देखा, बोरे भी नहीं, बांस भी नहीं, बाघ भी नहीं, परी. ... देवी... मीता... हीरादेवी.... महुआ घटवारिन.... कोई नहीं। मरे हुए मुहूर्तो की गूंगी आवाजें मुखर होना चाहती हैं। हिरामन के होंठ हिल रहे हैं। शायद वह तीसरी कसम खा रहा है– कंपनी की औरत की लादनी....।'' हिरामन अचानक अपने दोनों बैलों को झिड़कियां देते हुए, दुआली से पीटते हुए कह उठता है–''रेलवे लाईन की ओर उलट–उलट कर क्या देखते हो ?'' दोनों बैल कदम खोल कर चाल पकड़ते हुए दौड़ने लगते हैं। हिरामन गुनगुनाने लगता है–''अजी हां, मारे गए गुलफाम....।''20 हिरामन तीसरी कसम खाता है कि वह फिर कभी नौटंकी कम्पनी की औरत हीराबाई की सवारी नहीं लादेगा अपनी गाड़ी में, क्योंकि किसी की जुदाई इससे बढ़कर दर्दनाक क्या हो सकती है ?

निष्कर्ष– रेणु जी की कहानियों की खूबियां तराशते हुए मोहन गुप्त जी लिखते हैं–''फणीश्वरनाथ रेणु की कहानिया हमें एक ऐसे हिन्दुस्तान की अन्तर्यात्रा पर ले जाती हैं, जो अभाव, अज्ञानता, अन्धविश्वास, मजबूरी और बेबसी से घिरा है। लेकिन इस सबके बावजूद बल्कि साथ–साथ जिसमें जीने, भरपुर रस–रंग और फड़क के साथ जीने की ललक है। यह ललक ही रेणु की रचना–भागीरथी का उद्‌गम–स्थल–गोमुख है।''21निश्चय ही रेणु जी की कहानियां भारत के गांव–देहात की सच्ची तस्वीर खींचने में सिद्धहस्त हैं। आपकी कथा कृतियां आपके भोगे हुए जीवन की मार्मिक अभिव्यक्ति हैं।

संदर्भ सूची

1. प्रतिनिधि कहानियां–फणीश्वरनाथ रेणु राजकमल, प्रकाशन नई दिल्ली–1984, पृष्ठ –40
2. प्रतिनिधि कहानियां–फणीश्वरनाथ रेणु राजकमल, प्रकाशन नई दिल्ली–1984, पृष्ठ –41
3. प्रतिनिधि कहानियां–फणीश्वरनाथ रेणु राजकमल, प्रकाशन नई दिल्ली–1984, पृष्ठ –42
4. प्रतिनिधि कहानियां–फणीश्वरनाथ रेणु राजकमल, प्रकाशन नई दिल्ली–1984, पृष्ठ –43
5. प्रतिनिधि कहानियां–फणीश्वरनाथ रेणु राजकमल, प्रकाशन नई दिल्ली–1984, पृष्ठ –44
6. प्रतिनिधि कहानियां–फणीश्वरनाथ रेणु राजकमल, प्रकाशन नई दिल्ली–1984, पृष्ठ –51
7. प्रतिनिधि कहानियां–फणीश्वरनाथ रेणु राजकमल, प्रकाशन नई दिल्ली–1984, पृष्ठ –52
8. प्रतिनिधि कहानियां–फणीश्वरनाथ रेणु राजकमल, प्रकाशन नई दिल्ली–1984, पृष्ठ –54
9. प्रतिनिधि कहानियां–फणीश्वरनाथ रेणु राजकमल, प्रकाशन नई दिल्ली–1984, पृष्ठ –55
10. प्रतिनिधि कहानियां–फणीश्वरनाथ रेणु राजकमल, प्रकाशन नई दिल्ली–1984, पृष्ठ –56
11. प्रतिनिधि कहानियां–फणीश्वरनाथ रेणु राजकमल, प्रकाशन नई दिल्ली–1984,पृष्ठ – 112
12. प्रतिनिधि कहानियां–फणीश्वरनाथ रेणु राजकमल, प्रकाशन नई दिल्ली–1984,पृष्ठ – 113
13. प्रतिनिधि कहानियां–फणीश्वरनाथ रेणु राजकमल, प्रकाशन नई दिल्ली–1984,पृष्ठ – 125
14. प्रतिनिधि कहानियां–फणीश्वरनाथ रेणु राजकमल, प्रकाशन नई दिल्ली–1984,पृष्ठ – 131
15. प्रतिनिधि कहानियां–फणीश्वरनाथ रेणु राजकमल, प्रकाशन नई दिल्ली–1984,पृष्ठ – 132
16. प्रतिनिधि कहानियां–फणीश्वरनाथ रेणु राजकमल, प्रकाशन नई दिल्ली–1984,पृष्ठ – 133
17. प्रतिनिधि कहानियां–फणीश्वरनाथ रेणु राजकमल, प्रकाशन नई दिल्ली–1984,पृष्ठ – 137
18. प्रतिनिधि कहानियां–फणीश्वरनाथ रेणु राजकमल, प्रकाशन नई दिल्ली–1984,पृष्ठ – 144
19. प्रतिनिधि कहानियां–फणीश्वरनाथ रेणु राजकमल, प्रकाशन नई दिल्ली–1984,पृष्ठ – 145
20. प्रतिनिधि कहानियां–फणीश्वरनाथ रेणु राजकमल, प्रकाशन नई दिल्ली–1984,पृष्ठ – 146
21. फणीश्वरनाथ रेणु, प्रतिनिधि कहानियां'' सं. मोहन गुप्त, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,1984, भूमिका।